2015

AUG-SEP

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)

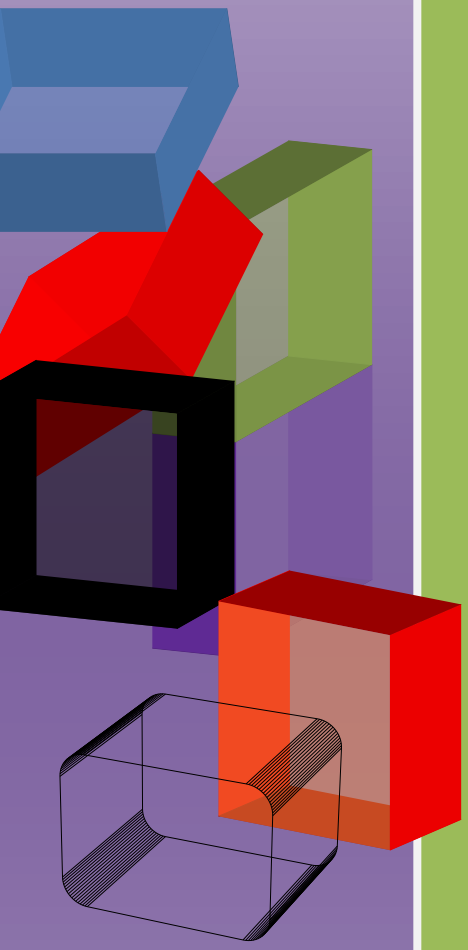

(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Impact factor: 2.125

V O L – I V I s s u e s : V

Chief-Editor:

Ubale Amol Baban

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
(Bi-Monthly) Peer-Reviewed Journal Vol No IV Issues V
AUGUST-SEP 2015 ISSN 2278-5655

वरिष्ठ श्रेणी सेवारत् प्रशिक्षण का अध्ययन

प्रा.डॉ.तारसिंग नाईक

सहाय्यक प्राध्यापक,

श्री महाराणी ताराबाई शासकीय

अध्यापक महाविद्यालय, कोल्हापुर।

प्रस्तावना –

सेवारत् अध्यापक–शिक्षा में व्यावसायिक अध्यापकों एवं अन्य अध्यापकों को उनके व्यवसाय से सम्बन्धित निरन्तर जानकारी प्रदान करना, एवं व्यावसायिक गुणो तथा कौशलों में सुधार एवं विकास करना सम्मिलित है। सेवारत् अध्यापक–शिक्षा की व्यवस्था, अध्यापक को शिक्षण–व्यवसाय में प्रवेश करने के पश्चात् उनके लगातार विकास के लिये उचित अनुदेशन को सुनिश्चित करने के लिये दी जाती है। सेवारत् अध्यापक–शिक्षा द्वारा अध्यापकों के अन्दर व्यावसायिक गुणों का विकास किया जाता है।

अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापक जिन्होने बारह वर्षकी सेवाकाल पूर्ण कि है, ऐसे प्राचार्य और अध्यापकों को उच्च वेतनमान का लाभ देने की आवश्यकतायें ध्यान में रखी है। महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक संशोधन एवं प्रशिक्षण परिषद, पुना के सहयोग से कार्य करने की जिम्मेदारी राज्य मे छं कॉलेजों को दी गई थी। प्रस्तुत सेवारत् प्रशिक्षण में प्राचार्य और अध्यापकों को नवीन पाठयक्रम तथा शिक्षण – विधियों से अवगत करना, नवीन प्रर्वतनो से अवगत हो सके। इसके लिए सेवारत् प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। प्राचार्य और अध्यापक के प्रशिक्षण से शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता का विकास होगा। प्रशिक्षण में प्राचार्य और अध्यापक में अनुसन्धान का कौशल में वृध्दी होगी।

शिक्षण के क्षेत्र में दिन–प्रतिदिन नये–नये अनुसंधानों की सहायता से नये–नये विचारों का प्रादुर्भाव हो रहा है, कि शिक्षार्थी को क्या और कैसे पढाया जाए। सामाजिक वातावरण, मूल्यों, मानकों आदि में परिवर्तन के कारण शिक्षक को नवीन विधियों एवं युक्तियों का प्रयोग करना, शैक्षिक विस्तार करना, ज्ञान अभिवृत्ति एवं कौशल की आवश्यकता होती है।

अध्ययन की आवश्यकता –

ज्ञान के क्षेत्र में पुनः अर्थापन की प्रवृत्ति का विकास तिव्र गतिसे हो रहा है। जिससे कि अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण के समय दी गयी शिक्षा की निरपेक्षता का मूल्यांकन किया जा सके। बहुतसी ऐसी शिक्षण प्रविधियों का विकास हो रहा हैं, जिसका उपयोग करने में सकारात्मक समर्थन करने की आवश्यकता है। विद्यालय शिक्षण में नये एवं उपयोगी अनुदेशन माध्यमों की खोज की जा रही हैं अंतः यह आवश्यक किया जाता है की, भाषा, प्रयोगशाला, कम्प्यूटर और दूरदर्शन का उपयोग नये ढंग से शिक्षण एवं अधिगम के लिये किया जाए।

अध्यापक विद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापकों के सेवारत् प्रशिक्षण से यह भी ज्ञात होगा की विद्यालय स्तर के सेवारत् प्राचार्य और अध्यापकों के लिए शिक्षा में जो परिवर्तन हो रहे हैं उनसे अध्यापक विद्यालय के अध्यापकों को अवगत कराया जाये जिससे वे नये परिवेश की शैक्षिक समस्याओं को भली प्रकार समझकर उनका समाधान कर सकें।

उद्देश –

- अध्यापक विद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापकों की कार्यकुशलता को बढाने के लिये नये–नये उद्दीपनों को प्रदान करना।
- अध्यापक विद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापकों को अपनी समस्याओं के प्रति जानकारी प्रदान करना, तथा उनके हल करने के लिए उनके ज्ञान एवं बोध का उपयोग करने में सहायता।

- शिक्षा में हो रही नयी शिक्षण प्रविधियों एवं अविष्कारों से सेवारत् प्राचार्य और अध्यापक को अवगत कराना।
- सेवारत् प्राचार्य और अध्यापकों को मूल्यांकन प्रविधियों एवं पाठय्क्रम के विषय में जानकारी प्रदान करना।

परिसीमन –

- प्रस्तुत अध्ययन में 12 वर्ष कालावधी तक के सेवारत् प्राचार्य और अध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल श्री महाराणी ताराबाई शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, कोल्हापुर प्रशिक्षण संस्था तक ही सिमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में मई 2015 से 30 अगस्त 2015 तक प्रशिक्षण में सहभागी प्राचार्य और अध्यापकाचार्या को ही समिल्लित किया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के लिए कोल्हापुर, सांगली, सातारा, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिले के अनुदानित अध्यापक विद्यालय के 28 प्राचार्य और अध्यापकों को चयनित किया गया। कुल प्राचार्य और अध्यापकों में चयनित न्यादर्श का चयन किया गया।

क्र.	जिला	समूह	पुरूष	महिला	योग
1.	कोल्हापूर	प्राचार्य	4	–	14.29
		अध्यापक	5	01	21.43
2.	सांगली	प्राचार्य	2	–	7.14
		अध्यापक	1	4	17.86

3.	सातारा	प्राचार्य	1	1	7.14
		अध्यापक	4	1	17.86
4.	रत्नागिरी	प्राचार्य	—	—	0
		अध्यापक	—	02	7.14
5.	सिंधुदुर्ग	प्राचार्य	01	—	3.57
		अध्यापक	01	—	3.57

प्रदत्त संग्रह और प्रदत्तोका विश्लेषण –

प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों को सेवारत् प्रशिक्षण से संबंधित प्रदत्त एकत्र करने के लिये शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सेवारत् प्रशिक्षण में संबंधित प्राचार्य और अध्यापकों जिला के

सम्मिलित समूह का रेखाचित्र

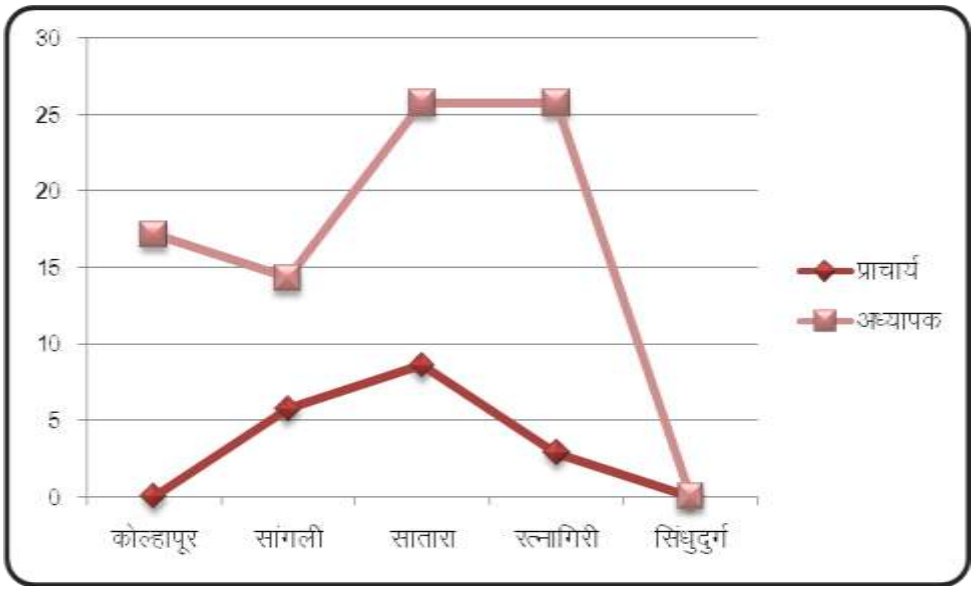

रेखाचित्र से स्पष्ट है कि कोल्हापुर, सिंधुदुर्ग प्राचार्य सेवारत् प्रशिक्षण में सम्मिलित नही है। अतः यह कहा जा सकता है कि दो जिले के प्राचार्य और सेवारत् प्रशिक्षण में सम्मिलित प्राचार्य इनका सेवाकालीन अनुभव भिन्न है।

अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों के सेवारत् प्रशिक्षण के संबंध में अध्ययन को प्रतिशत तालिका में दर्शाया गया है।

अ.क्र.	विधान	Outstanding	Very Good	Good	Average	Poor
1.	प्रशिक्षणार्थीयों का स्वागत और उद्घाटन	10	18			
2.	आपस में परिचय कराना।	4	22	2		
3.	प्रशिक्षण की विशेषताएँ और प्रक्रिया स्पष्ट करने की क्षमता	22	6	0		
4.	प्रशिक्षण में प्राथमिक शिक्षा योजनाएँ और बालक शिक्षा की जानकारी देने की क्षमता	15	8	5		
5.	प्रशिक्षण में कार्य अनुसन्धान और प्रशिक्षणार्थीयों का अनुभव का विचार	18	6	2	2	
6.	भिन्न विषय/घटक/फलक/तकनीकी के आधारपर अध्यापन	13	6	3	6	
7.	अध्यापन पध्दती और पाठ	20	5	3		

	सादरीकरण क्षमता					
8.	वंचित शिक्षा व्याख्यान और परिचर्चा	16	10	2		
9.	अंग्रेजी अध्यापन समस्या और उपाय	13	12	3		
10.	संगणक का शिक्षा में उपयोग और प्रात्यक्षिक कार्य	21	6	1		
11.	शिक्षा में समाज का सहयोग अध्यापन / सहकार्य / परिसंवाद और नियोजन	23	3	2		
12.	अध्यापक सेवाएँ का ज्ञान	18	7	3		
13.	मानसशास्त्र की नई संकल्पनाएँ	20	5	2	1	
14.	नियमित मूल्यांकन की ज्ञान देने की क्षमता	23	5			
15.	एनसीटीई / डीआयईटी / एनसीईआरटी संस्था की जानकारी	25	3			
16.	आशययुक्त अध्यापन पध्दती और पाठ सादरीकरण	15	7	6		
17.	बालक शिक्षा और पाठ	22	6			
18.	पर्यावरण शिक्षा	20	5	3		
19.	मूल्यशिक्षा का ज्ञान	23	3	2		

20.	शिक्षक की गुणवत्ता	25	2	1		
21.	प्रशिक्षण में समय का नियोजन	28				
22.	प्रशिक्षण में प्रात्यक्षिक कार्य की जानकारी	26	1	1		
23.	अगले प्रशिक्षण सत्र की जानकारी	22	3	3		
24.	स्वाध्याय/क्षेत्रभेट/अहवाल का ज्ञान	21	5	2		
25.	प्रशिक्षण में अनुसन्धान का ज्ञान	22	5	1		
26.	प्रशिक्षण में नियोजन, शिस्त और आंतरक्रिया	20	6	2		
27.	कुल प्रशिक्षण	25	3			

अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों के सेवारत् प्रशिक्षण में कोल्हापुर और सांगली जिला के अध्यापकों का समूह अधिकतम है। इन दोनो जिला के सेवारत् प्रशिक्षण में सम्मिलित प्राचार्य की प्रतिशत में 28.57 है।

अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों ने सेवारत् प्रशिक्षण में अध्यापकों का समूह अधिकतम सम्मिलित है।

निष्कर्ष :

- परिणामों से स्पष्ट है कि अधिकांश अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण में नवीनतम प्रवृत्तियों का उपयोग हुआ यह मानते है।
- परिणामों से स्पष्ट है की अधिक मात्रा में प्राचार्य और अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण महाविद्यालय में स्टाफ पुस्तकालय, उपकरण और प्रयोगशाला थी यह मानते ळें

- अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण में उनकी प्रशासकीय क्षमता बढानें के लिए ज्ञान दिया गया यह मानते है।
- परिणामों से स्पष्ट है कि अधिक मात्रा में प्राचार्य और अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण में सेमीनार, कार्यशाला आदि का आयोजन अधिकतम किया गया यह मानते है।
- अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण नियोजित समय के अनुसार था यह मानते है।
- परिणामों से स्पष्ट है कि अधिक मात्रा में प्राचार्य और अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण में नवीन मूल्यांकन पद्धतियोंका ज्ञान दिया गया यह मानते है।
- अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों के सेवारत् अतिरिक्त विषयों की जानकारी प्राप्त हुई यह अधिक प्राचार्य और अध्यापक मानते है।
- सेवारत् प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान का उपयोग भविष्य में प्राचार्य और अध्यापक मानते है।
- अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों के सेवारत् प्रशिक्षण में ई–मेल के माध्यम से संप्रेषित नही किया ऐसे प्राचार्य मानते है।
- सेवारत् प्रशिक्षण में सम्प्रेषण प्रौद्योगिकीका अनुप्रयोग प्राचार्य और अध्यापक मानते है।
- परिणामों से स्पष्ट है कि अधिक मात्रा में प्राचार्य और अध्यापक सेवारत् प्रशिक्षण में संस्थाओं का व्यावहारिक, शैक्षिक विकास के लिए प्रोत्साहित किया यह मानते है।
- सेवारत् प्रशिक्षण आयोजन सें प्राचार्य और अध्यापक शिक्षा में परिवर्तन होगा और प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान से प्राचार्य और अध्यापकों की कार्यकुशलता बढाने के लिए प्राचार्य और अध्यापक मानते है।
- सेवारत् प्रशिक्षण में कार्य अनुसन्धान और प्रशिक्षणार्थीयों का शोध अनुभव का ज्ञान उपयोग उचित रहा यह मानते है।
- सेवारत् प्रशिक्षण में वंचित शिक्षा, अंग्रेजी शिक्षा और संगणक तकनीकी का ज्ञान अधिकतम मिला यह प्राचार्य और अध्यापक मानते है।

- सेवारत प्रशिक्षण में गुणात्मक विकास पर विशेष बल दिया गया और उचित पाठयक्रमों कि सहायता से सेवारत् प्रशिक्षण में प्राचार्य और अध्यापकों को शिक्षा दी यह मानते है।
- अध्यापक विद्यालय के सेवारत् प्रशिक्षण में आदर्श पाठ का प्रदर्शन, शिक्षण कौशलों के विकास एवं सुधार करने की दृष्टी से सुझाव और मुल्यांकन उपकरणों की उपयुक्तता, गृहकार्य, प्रात्यक्षिक नियोजन का ज्ञान प्रशिक्षण में दिया गया ऐसा प्राचार्य और अध्यापक अधिकतम मानते है।

सुझाव –

- अध्यापक विद्यालय कें प्राचार्य और अध्यापकों के सेवारत प्रशिक्षण में सहल का आयोजन, प्रशिक्षण पुस्तिकामें परिवर्तन और प्रशिक्षण का कालावधी 20 दिनों से बढाकर 20 दिन तक होना चाहिए।
- अध्यापक विद्यालय कें संस्थाओंकि आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर भिन्नता के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- सेवारत् प्रशिक्षण में प्राचार्य और अध्यापकों को महाविद्यालय के प्रधानआचार्य और शिक्षकों से विचार–विमर्श करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ –

- कपिल एच.के.(1994–95) अनुसंधान विधियाँ, आगरा, हर प्रसाद भार्गवा
- मार्गदर्शिका (2010–11) अध्यापक विद्यालय के प्राचार्य और अध्यापकों के लिए सेवारत् प्रशिक्षण महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक संशोधन एवं प्रशिक्षण परिषद, पुना।
- पाण्डेय के.पी.(2006), शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी।